नवांकुर

रचनाओं का सागर

सत्यमेव जयते

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय
भारत सरकार

प्रस्तावना

यह कविता संकलन मंत्रालय के कर्मचारियों की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। हिन्दी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता में मंत्रालय के अधिकारी/ कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं से उपस्थित सभी को मंत्र-मुग्ध कर दिया। सभी ने लय, शब्द चयन, ध्वनि, तुकबंदी, संरचना आदि के संयोजन से जो रचनाएं प्रस्तुत की वह वाकई उनके भीतर छुपी कवि/ कवियत्री को उजागर करती है साथ ही वरिष्ठ आर्थिक सलाहाकर महोदय के प्रेरणादायक अभिव्यक्ति ने भी सभी को प्रेरित किया है। उनके सुझाव पर ही यह कविता संकलन प्रकाशित किया जा रहा है।

कविता-पाठ के निर्णायक-मंडल में शामिल श्री सचिन कुमार कटियार, अवर सचिव तथा श्री अरूण चंद्र रॉय, व.अनु.अधि., गृह मंत्रालय का आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर निर्णय को एक अंजाम दिया जो सबसे जटिल प्रक्रिया है चूंकि सभी की कविताएं एक से बढ़कर एक थी।

साथ ही मंत्रालय की मीडिया टीम का भी आभार, जिन्होंने इसकी डिजाइनिंग में सहयोग किया।

संगीता तोपनो
उप निदेशक (राजभाषा)

अनिमेष भारती, आई.ई.एस.
वरिष्ठ आर्थिक सलाहकार
ANIMESH BHARTI, I.E.S.
SENIOR ECONOMIC ADVISER

सत्यमेव जयते

पत्तन, पोत परिवहन
और जलमार्ग मंत्रालय
भारत सरकार
MINISTRY OF PORTS, SHIPPING
AND WATERWAYS
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

मंत्रालय में आयोजित हिन्दी पखवाड़ा, 2024 के दौरान अधिकारियों/ कर्मचारियों ने प्रत्येक प्रतियोगिता में हिस्सा लेकर आयोजन को सफल बनाया। किंतु हिन्दी-कविता-पाठ प्रतियोगिता में प्रतिभागियों का उत्साह चरम सीमा पर था। प्रत्येक प्रतिभागी ने न केवल उत्साह से अपनी कविता पढ़ी बल्कि अपनी और भी कविताएं सुनाने के लिए आतुर दिखे।

इस प्रतियोगिता की यह भी अनूठी विशेषता रही कि इस कविता पाठ में प्रत्येक समसायिक और महत्वपूर्ण विषय पर कविता पढ़ी गई और यहां तक कि अध्यात्म विषय भी अछूता नहीं रहा। अत्यंत सुरुचि पूर्ण पाठन और गायन शैली में कविता पाठ ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया।

आशा करता हूं कि भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन में सभी लोग बढ़-चढ़कर हिस्सा लेंगे और साथ ही मैं इस कार्य के लिए हिन्दी अनुभाग की समस्त टीम को भी इस आयोजन की व्यवस्था एवं संचालन के लिए बहुत-बहुत बधाई और धन्यवाद देता हूं।

कविता पाठ के सभी प्रतिभागियों का साधुवाद एवं धन्यवाद।

17/10/24
(अनिमेष भारती)

परिवहन भवन, 1, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001, भारत
दूरभाष : +91-11-23711323, ई-मेल : a.bharti@nic.in

भाषा के विकास में कविता की रचनात्मक भूमिका

सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के प्रचार प्रसार के उद्देश्य से हिन्दी दिवस के आयोजन का स्वरूप विगत वर्षों में काफी बदला है । इन वर्षों में हिन्दी दिवस का आयोजन एक दिवसीय रस्मी कार्यक्रम न होकर यह हिन्दी पखवाड़े या हिन्दी माह के तौर पर मनाया जाने लगा है जहां कार्यालयों में राजभाषा के रूप में हिन्दी को प्रसारित करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहनात्मक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं । इसी क्रम में मुझे इस वर्ष पत्तन, पोत परिवहन एवं जलमार्ग मंत्रालय में हिन्दी कविता पाठ कार्यक्रम में निर्णायक के रूप में शामिल होने का अवसर मिला।

हम जानते हैं कि कविता का मानव जीवन में बड़ा महत्व है। कविता मनुष्य को जीवन जीने की सही शिक्षा देती है। अच्छे संस्कार देती है। इसके अतिरिक्त कविता मानव मात्र को ऊंचे आदर्श, पवित्र धारणा और अटल आस्था को धारण करने की ऊर्जा और शक्ति देती है। कविता के माध्यम से जीवन का सत्य और सब प्रकार के अनुभवों को व्यक्त किया जा सकता है। आज से सैंकड़ों वर्ष पहले राजर्षि भर्तृहरि जी ने कविता के विषय में यहां तक कह दिया था कि यदि किसी के पास अच्छी कविता है तो उसे विशाल राज्य की क्या जरूरत है।

किन्तु सरकारी कार्यालयों में कविता का अर्थ हिन्दी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना है, हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रेरित करना है। इस दृष्टि से यह आयोजन काफी सफल रहा क्योंकि एक छोटे से मंत्रालय में प्रतिभागियों की संख्या काफी अच्छी थी और प्रतिभागी कवियों एवं कवयित्रियों ने विभिन्न विषयों पर कुछ उम्दा स्वरचित कविताओं का पाठ किया। सरकारी कार्यालयों में जहां हम देखते हैं कर्मचारी एवं अधिकारी कार्य के बोझ तले एवं नियमों में बंध कर धीरे धीरे संवेदनहीन होते चले जाते हैं , वहीं इस मंत्रालय में यह देखना सुखद था कि जीवन के विभिन्न आयामों को छूती हुई कविताएं सहजता से अभिव्यक्त हो रही थीं ।

यह विदित है कि भावनात्मक अभिव्यक्ति और शब्द सौंदर्य जैसी विशेषताएँ कविता के सार को परिभाषित करती हैं और यही कविता को अन्य कलात्मक विधाओं से अलग भी करती हैं और कविता को अनूठा और आकर्षक बनाती हैं। यहां पाठ की गई कविताओं में यह पाया कि ये कविताएं भावनाओं को गहरे प्रभाव के साथ व्यक्त की गई। इससे जहां एक ओर उपस्थित श्रोतागण तत्काल तो

प्रेरित हुए ही वहीं दूसरी ओर इन कविताओं का असर देर तक प्रतिध्वनित होता रहेगा। यह सच है कि मंत्रालय में कविता पाठ करने वाले कवि या कवयित्री कविता के विशेषज्ञ नहीं हैं न ही वे प्रोफेशनल हैं किन्तु इन कवियों ने कविता में विशिष्ट लय और पैटर्न का उपयोग करते हुए कविता के भावनात्मक एवं लयात्मक धर्म का निर्वहन किया जिसने श्रोताओं को एक संवेदी एवं मनोरंजक अनुभव प्रदान किया।

हम यह जानते हैं कि कविता प्राचीन सभ्यताओं से ही अस्तित्व में है और जैसे-जैसे सभ्यताएँ विकसित हुईं, कविता में भी परिवर्तन हुए, जो बदलते सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिदृश्यों के अनुकूल हो गई। इस दृष्टि से भी इस कार्यक्रम में पढ़ी गई कविताएं अपनी सार्थकता सिद्ध करती हैं क्योंकि जीवन के सभी आयामों और पहलुओं को छूती हैं। इस इंद्रधनुषी काव्य पाठ में जहां एक कविता आध्यात्म विषय पर पढ़ी गई वहीं एक कविता सिपाही के बलिदान को रेखांकित कर रही थी। पर्यावरण, बेटी, नारी जैसे विषयों को छूती हुई कविताओं के साथ साथ कुछ ऐसी कविताएं भी पढ़ी गई जो मनोबल को बढ़ाने, प्रतिकूल परिस्थितियों में हौसला नहीं छोड़ने की सीख देती हैं। वास्तव में कविता का उद्देश्य भी यही है।

किसी भी भाषा के विकास में जितना योगदान कविता का है उतना किसी अन्य विधा का नहीं। भाषा के विकास में कविता की भूमिका अत्यंत रचनात्मक होती है। इसलिए यदि सरकारी कार्यालयों में हिन्दी भाषा को राजभाषा के रूप में और अधिक सहज एवं संप्रेषणीय बनाना है तो इस भाषा में काम करने वाले कार्मिकों में कविता का रस संचारित होना एक महत्वपूर्ण उपाय है। आने वाले समय में ऐसे आयोजनों से निश्चित ही कार्यालय में राजभाषा के प्रयोग में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

इस संग्रह में शामिल सभी कवियों एवं कवयित्रियों को मैं उनके काव्य-जीवन के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

अरुण चंद्र राय
कवि, लेखक एवं स्तंभकार
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, गृह मंत्रालय
फोन : 9811721147

क्यों मन न बांधे धीर

तू है इक पूर्ण आत्मा, क्यों माने खुद को शरीर,
गुरु शरण में आकर भी क्यों मन न बांधे धीर।
प्रभु ने जगत में भेजा तुझको करने सैर,
कर्मों की खेती करते, कर बैठा खुद से बैर,
सब गुरु को करदे अर्पण, अब बन जा मस्त फकीर,
गुरु शरण में आकर भी क्यों मन न बांधे धीर।

कर्मों का कर्ता बनकर उलझा तू जाए,
द्रष्टा बन खेल समझ ले, मुक्ति का यही उपाय,
न तू कर्ता न भर्ता, ये गुरु की दी तकरीर,
गुरु शरण में आकर भी क्यों मन न बांधे धीर।

बुद्धि और मन ने तुझको सदा भटकाया,
सत्संग शरण में आकर सच को जो है पाया,
तो धारण गुरु वचनों को कर बदल अपनी तकदीर,
गुरु शरण में आकर भी क्यों मन न बांधे धीर।

तू है इक पूर्ण आत्मा, क्यों माने खुद को शरीर,
गुरु शरण में आकर भी क्यों मन न बांधे धीर।

अनीता भुटानी
प्रधान निजी सचिव
मो: 9899197908

शीर्षक – बेटी

कलकल बहते झरने नदियां
बहती नदी का छोर है बेटी।
अम्बर में पंछी नित गाए
पंछी का कलरव है बेटी।

बिंदिया, चूड़ी, झुमके, कंगना
कंगन की खन खन है बेटी।
नथनी, तगड़ी,बिछिया,पायल
पायल की छम छम है बेटी।

मन के भीतर हलचल हलचल
चेहरे से सागर है बेटी।
राग,द्वेष, मद, लोभ, मोह
भावसूची का सार है बेटी।

पान का पत्ता, बेल, धतूरा
आंगन की तुलसी है बेटी।
हरी घास पर ओस का मोती
बड़े वृक्ष की छांव है बेटी।

अशोक कुमार मीना
(रोकड़ अनुभाग)
पत्तन पोत परिवहन एंव जलमार्ग मंत्रालय

नारी

गर्व है मुझे मैं नारी हूँ
अकेले ही सब पर भारी हूँ
तोड़ कर पिंजरा
जाने कब मैं उड़ जाउँगी
चाहे लाख बिछा लो बंदिशे
फिर भी दूर आसमान में
अपनी जगह बनाऊंगी
हां गर्व है मुझे मैं नारी हूँ
अकेले ही सब पर भारी हूँ
भले ही परम्परावादी जंजीरो से
बाधें है दुनिया के लोगों ने पैर मेरे
फिर भी उस जंजीरों को तोड़ जाऊगी
मैं किसी से कम नहीं दुनिया को दिखलाऊगी
हाँ गर्व है मुझे मैं नारी हूँ
अकेले ही सब पर भारी हूँ
मैं नारी हूँ मैं नारी हूँ
मैं जगत जननी

अकेले ही सब पर भारी हूँ।

इन्दु शर्मा
(आर्थिक अधिकारी)
पत्तन, पोत परिवहन एंव जलमार्ग मंत्रालय।

मैं सिपाही हूँ

मैं हूँ भारत माँ का सपूत, ये देश मेरा मैं सिपाही हूँ,
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।

उत्तुंग हिमालय की चोटी से, कन्या कुमारी तक फैला,
हरियाली की चादर ओढ़े , मेरी माँ का आँचल है उजला,
केशरिया साफा को पहने, हम भारत माँ के हैं लाला,
अगर करे हिमाकत अरि कोई, मेरी जननी-जन्म भूमि को मैला,
उनके नापाक इरादों को, इसी धरती में दफनाउंगा,
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।
मैं हूँ भारत माँ का सपूत, ये देश मेरा मैं सिपाही हूँ ,
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।

हे जननी मेरी, हे माई मेरी, मत आँख से आंसू बहने दो,
भारत माता तेरा आँचल है, ममता गंगा की धारा है ,
मैं बहुत नसीबों वाला हूँ, मेरा रोम रोम तेरी छाया है,
पावन गंगा धारा में मिल, तेरी पूजा घर में आऊंगा,
क्यों तू है विकल, गौरव हूँ तेरा, देवो पे चढ़ाये जाऊंगा,
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।

मेरी प्यारी बहन, तू लाज मेरी, तेरी अस्मत का रखवाला हूँ,
है आन मुझे तेरी राखी का, मैं रहूं न रहूं तेरा मान रहे ,
तेरी मांग कभी सुनी न हो ,तेरा आँचल हर दम हरी रहे ,
आये जो कोई काफिर बनकर, तेरा आँचल मैला करने को,
मैं रक्षक बनकर बहन तेरी, सीने पर गोली खाऊंगा,
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।

मेहबूब मेरी, तू जान मेरी, ये मुखड़ा तेरा खिला रहे ,
भारत माता तेरी मूरत है, ये सूरत दिल में बसा रहे,
ये धरती भी मेहबूब मेरी, मुझे इसका क़र्ज़ चुकाने दो,
जिस धरती पे मुझको जनम मिला, उसका भी फ़र्ज़ निभाने दो,

मेरे जिस्म में लोहूर हे न रहे,इस झंडे की लाली बनी रहे,
भारत माँ की गरिमा के लिए, मैं अपना शीश कटाऊंगा।
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।

तुमहो निर्भय, निर्भीक, निडर, माँ के सपने साकार करो,
आबाद रहे माँ की अस्मत, प्रहरी बनकर हम डटे हुए,
जब तक सांसे चलती है मेरी, लोहू बहती है शिराओं में,
कोई बाल न बांका कर पाए ,पग धरती पर हैं टिके हुए,
मैं लाल तेरा, अभिमान तेरा, आजादी का जश्न मनाऊंगा,
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।
मैं हूँ भारत माँ का सपूत, ये देश मेरा मैं सिपाही हूँ,
मिट्टी से बना, मिटटी में सना, इसी मिटटी में मिल जाऊंगा।

उत्तम कुमार मिश्रा
अवर सचिव
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

हे कविता तुम आ जाती हो

मधुर चांदनी सी खिलकर, काली बदली में तुम छिपकर
झंझा झकोर के गर्जन सी, युग-युग के परिवर्तन सी
हाला प्याला मधुशाला सी, झांसी की अदम्य ज्वाला सी
सरसों के पीले फूलों से, निज अहसास करा जाती हो,
हे कविता, तुम आ जाती हो।

नव शिशु की किलकारी सी, फागुन की पिचकारी सी
चित्तौड़ की आन उठाती, कश्मीर की शान बढ़ाती
ख्वाबों के झूले में चढ़कर, गिरते मन का बोझ उठाकर
षडऋतु का आवर्तन बन, अद्‌भुत रस बरसा जाती हो
हे कविता, तुम आ जाती हो।

चांद-सूरज सी प्रकाशमय, नील प्रशांत सी गहरी हो,
सागर की उत्ताल तरंगें, कहां कभी तुम ठहरी हो,
हर युग की सहज जान बन, वीणा की तुम मधुर तान बन
कोकिल कंठ की स्वर लहरी से, दिल-दिल पर छा जाती हो,
हे कविता, तुम आ जाती हो।

महादेवी की नीर भरी बदरी, प्रसाद की आंसू झरना हो,
आशा, श्रद्धा, चिन्ता सर्ग बन, हिम जल सा शीतल बहना हो,
तुम हो दिनकर की कुरुक्षेत्र, पन्त की मधुर कल्पना हो,
मीरा की गिरधर नागर हो, सूर की वात्सल्य सर्जना हो,
तुलसीदास की मानस बनकर, अमृत रस बरसा जाती हो,
हे कविता, तुम आ जाती हो।

हारा थका बेचारा हो, टूटे का तुम्हीं सहारा हो,
मधुर मिलन का सम्बल हो, सूने दिल का आलम्बन हो,
असहाय पथिक की आशा हो, नवजीवन की अभिलाषा हो,
नहीं सूझती कोई डगर जब, नूतन राह दिखा जाती हो,
हे कविता, तुम आ जाती हो।

रज, तम और सत्य तुम्ही हो, पारब्रह्म का तत्व तुम्हीं हो,
सांख्य, भक्ति और कर्म तुम्ही हो,युगों-युगों का धर्म तुम्ही हो,
भाषा, संस्कृति, बोली हो, माता-पिता, हमजोली हो,
दोहा, सोरठा, चौपाई छंदों में, कुंडलियां, छप्पय बंदों में,
तत्व दर्शन करा जाती हो,
हे कविता, तुम आ जाती हो।

ॠग, यजुर और वेद साम, काशी मक्का परम धाम,
गीता का संदेश तुम्ही हो,बुद्ध का उपदेश तुम्ही हो,
कालिदास की उपमा हो, केशव की परम कल्पना हो,
कबीर की साखी शबद रमैनी हो,जयशंकर की कामायनी हो,
नानक दादू की वाणी पर चढ़ परम शान्ति बरसा जाती हो,
हे कविता, तुम आ जाती हो।

सहज और उन्मुक्त रीति से अपने हृदय की सहज प्रीति से
सीमा की दीवार तोड़कर अंतर्मन के शब्द जोड़कर
वसुधा एक बना जाती हो हे कविता, तुम आ जाती हो।

एल.पी. मौर्य
वरिष्ठ प्रधान निजी सचिव
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

हमको तुमको बस हिन्दी से प्यार हो

हमको-तुमको बस हिन्दी से प्यार हो
और हमेशा हिन्दी की जयकार हो
हिन्दी जीना सिखलाती हैं
यह प्रेम का पाठ पढ़ाती हैं
नदियां की इक-इक धारा भी
हिन्दी भाषा दोहराती हैं

हिन्दी से मिलता मान हमें
इससे ही आया ज्ञान हमें
हिन्दी ने ही तो दिलवाई
इस दुनिया में पहचान हमें
हर भारतवासी पर इसका अधिकार हो
हमको-तुमको बस हिन्दी से प्यार हो

हिन्दी कबीर मतवाला की
हिन्दी हैं गोपी, ग्वाला की
तुलसी, सूर, महादेवी
हिन्दी में पन्त, निराला की

मीराबाई गाये हिन्दी
सबके दिल पर छाये हिन्दी
केशव, भूषण, कवि जायसी के
होठों पर मुस्काये हिन्दी
हिन्दी की बिन्दी का ही श्रृंगार हो
हमको- तुमको बस हिन्दी से प्यार हो
हिन्दी सबको ही प्यारी है
खुसरों की राज दुलारी है
हिन्दी घर-घर तक पहुँचाना
हम सबकी जिम्मेदारी हैं
आओ हिन्दी का गान करें
हिन्दी का सब रसपान करें
रसखान, घनानन्द से कवि की
प्रिय हिन्दी का सम्मान करें
बोलचाल में हिन्दी का व्यावहार हो
हमको- तुमको बस हिन्दी से प्यार हो

फाल्गुन हिन्दी, सावन हिन्दी
भाषाओं में पावन हिन्दी
है देवनागरी लिपि जिसकी
ऐसी है मनभावन हिन्दी
सरगम में बहती हिन्दी
सबके दिल में रहती हिन्दी
मानवता की ही राह चलो
हर पल हमशे कहती हिन्दी
घर-घर में हिन्दी का सत्कार हो
हमको- तुमको बस हिन्दी से प्यार हो।।

गौरव शर्मा
(अनुभाग अधिकारी)
पत्तन, पोत परिवहन एंव जलमार्ग मंत्रालय

घायल घाटी

घाटी की है करुण पुकार ये कैसी कुदरती प्रहार,
धरती का स्वर्ग अब नहीं रहेगा, केसर सुगंध अब नहीं बहेगा।
टूटा कहर झेलम व तबी का, खो गया शिकारा डल झील का
चारों और है हाहाकार, ये कैसी कुदरती प्रहार।

सगे संबंधी बिछुड़ गएहै, सड़क रास्ते मिट से गए है
डूब गए है भवन छतों तक, छतें बनी है आश्रय अब तक
नाव बनी है तारणहार, ये कैसी कुदरती प्रहार।
भूस्खलन भक्षक भवनों का, पथअवरुध वैष्णो भक्तों का
झेलम तबी खतरे से पार, अस्त व्यस्त है दूर संचार
फंसे भक्तों की जय-जयकार, ये कैसी कुदरती प्रहार।

गायब हो गए तोड़ने वाले, सेना ने ही लोग निकाले,
फौजी सबकी जान बचाते, परोपकार में प्राण गवाते
बह गए सैनिक डूबी नाव, ये कैसी कुदरती प्रहार।

कुद्र दामिनी चमक रही है, बदली जोरों से गरज रही है
घोर घटाएं झम झम बरसें, मृत्यु बरस रही अम्बर से
जल तो जीवन फिर क्यों सैलाब, ये कैसी कुदरती प्रहार।

मेरे वृक्षों को काटा है, मेरे पशुओं को मारा है,
मेरे पर्वत को तोड़ा है, मेरी नदियों को छेड़ा है
चेताती हूँ बारम्बार, इसके तुम ही जिम्मेदार
यूं होता कुदरती प्रहार।
यूं होता कुदरती प्रहार।

दलजीत सिंह रावत
प्रधान निजी सचिव
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

वक़्त गुजर जाएगा

वक़्त का क्या है, गुजर ही जाएगा,
जो आज धुंध है, कल सूरज बन जाएगा।
वक़्त पहिया है रुकता नहीं, जो आज
ठहरा सा लगे,
वो कल गतिशील हो जाएगा।
वो बचपन के खेल, वो हँसी के पल,
जिनमें बसी थी मासूमियत, वो सब
धुंधले हो जाएँगे।
आज की उलझनों में, जीवन उलझा सा
लगता है,
दिल में एक बोझ लिए, हर दिन लंबा
लगता है।
सपने जो आज बिखरे हैं, कल फिर से
संवरेंगे,
जो राह आज मुश्किल है, कल वो
आसान हो जाएगी।
जो मंजिल आज दूर है, कल वही करीब
होगी,
जो रात आज अंधेरी है, कल नई सुबह
होगी।

वक़्त है कि थमता नहीं, हर रात के
बाद दिन जरूर आएगा,
जो आज धुंधला है, वो कल साफ
हो जाएगा।
जो आज भारी लगता है, कल वो
हल्का हो जाएगा।
तो जब भी हो खुशियों का खुमार
या हो मन उदास,
तो सोचना कि वक़्त है गुजर ही
जाएगा।
वक़्त की रफ़्तार है, हर बुरा दौर
गुजर जाएगा,
आज जो मुश्किलें हैं, वो कल की
सीख बन जाएँगी।
वो रिश्ते जिनमें आज दरारें हैं, वो
कल पुनः जुड़ जाएँगे,

जो दिल आज टूटा है, वो कल पुनः
हिम्मत जुटा लेगा,
वक़्त के साथ सब बदलता है, घाव
भरते हैं दिल मुस्कुराता है,
ये जो दुख का अंधेरा है, वो भी
सवेरा बन जाएगा।
वक़्त का यही दस्तूर है और यही
इसकी सच्चाई है,
हर खुशी, हर ग़म, वक़्त की धारा
में बह जाएगा।
वक़्त गुजर जाएगा और साथ में ये
सीख दे जाएगा
कि हर मुश्किल के बाद, एक नया
सवेरा जरूर आएगा,
वक़्त का क्या है, गुजर ही जाएगा ।

स्मिता श्रीवास्तव
अनुभाग अधिकारी,
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

ज़िन्दगी की मुस्कान

जीवन का ये सफर, कितना हसीन है, हर
कदम पर बिछी एक नयी कहानी हैं।
हर सुबह का सूरज, नई उम्मीद लेकर
आता है, मन के कोने में, एक नया गीत
गुनगुनाता है।

मैं हूँ इस धरा की बेटी, उसकी शान, हर
मुश्किल में ढूंढती, जीवन का नया जहान।
कभी फूलों की महक, कभी बारिश की
बूंद, हर लम्हे में पाती हूँ, मैं खुद का एक
रूप।

हर चुनौती को हंसते हुए अपनाती हूँ, जीत
और हार, दोनों को गले लगाती हूँ।
क्योंकि जानती हूँ, ये सब हैं जीवन के रंग,
हर अनुभव से मिलता है, एक नया ढंग।

बचपन की वो मासूमियत, अब भी मेरे
साथ है, मेरे दिल में बसी, वो खुशियों की
बरसात है।
कभी हवा की तरह, मैं उड़ती हूँ, कभी पेड़
की तरह, जड़ें जमाती हूँ।

जीवन की हर राह में, मैं मुस्कुराती हूँ,
हर दुःख-सुख को, मैं अपने में समाती हूँ।
क्योंकि जानती हूँ, ये यात्रा है सुन्दर,
हर मोड़ पर मिलती हूँ, खुद से हर पहर।

मैं हूँ वो रोशनी, जो कभी बुझती नहीं, मैं हूँ
वो लहर, जो कभी थमती नहीं।
जीवन की हर धड़कन, मेरे दिल में बसती है,
हर ख़ुशी हर ग़म, मेरे दिल से जुड़ती है।

मैं सपनों को अपने आकाश में उड़ाती हूँ,
हकीकत की ज़मीन पर, कदम जमाती हूँ।
क्योंकि जानती हूँ, ये जीवन की है सच्चाई,
हर दिन की शुरुआत, है एक नई ऊँचाई।

मैं वो नदी हूँ, जो बहती है निरंतर, हर मोड़
पर बदलती, फिर भी रहती अद्वितीय ।
कभी शांत कभी उग्र, ये मेरा स्वभाव, हर
लम्हे में ढूंढती हूँ, जीवन का असली अंदाज़।

जीवन की किताब के, हर पन्ने को सजाती हूँ,
हर अध्याय में, खुद को नये रूप में पाती हूँ।

स्मिता श्रीवास्तव
अनुभाग अधिकारी,
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

बोलना

जहां बोलना था उनको
वही पर डोल जाते हैं।
रहना था खामोश जहां पर
वहीं पर बोल जाते हैं।

निभाऐं रिश्ते जो तुमने,
वो जमाने भर से झूठे थे
बीबी की वजह से वो
अब माँ-बाप को भूल जाते है।

नहीं ऐतराज था उनको,
आँधी की तबाही पर
सूरज क्या छुपा बदली में,
वहीं पर बोल जाते हैं।

आज कल के ये बच्चे
जमाने भर की सुनते हैं
माँ-बाप अगर कुछ टोके
तो वो मुँह खोल जाते हैं।

रहे चुपचाप देखते सारे
कटे जब शीश सैनिकों के
चिराग बुझा क्या गलती से
वो जहर घोल जाते हैं।

महिला को अधिकार देने का
वो खूब ढोल बजाते हैं
कर रही प्रतिकार वो,
गिरफ्तारी पर झोल बताते हैं।

जहां पर बोलना था उनको,
वहीं पर डोल जाते हैं।
रहना था खामोश जहां पर
वहीं पर बोल जाते हैं।

देवेन्द्र कुमार शर्मा
(वरिष्ठ लेखाकार)
पत्तन, पोत परिवहन एंव जलमार्ग मंत्रालय

मजदूर

मजदूर हूं मैं
इस विपदा की घड़ी में
कितना मशहूर हूं मैं
फिर भी
खाना कपड़े और छत से दूर हूं मैं
मजदूर हूं मैं

गलती धनवान की,
मैं क्यों सजा भुगत रहा,
जिसने सबके घर बनाए,
खुद अपने घर जाने को
भटक रहा,

जिसने बनाए वाहन
धनवान के लिए,
पैदल पैदल हजारों कोस नप रहा,
जिसनें की बुआई और कटाई फसलों की,
एक टूक अन्न को तरस रहा,

थकता हूँ रूकता हूँ
थोड़ी भर नींद के लिए,
सपने भी कट जाते मेरे,
पूरे ना हों पाएं, इस पीड़ा को लिए,
जैसे मैंने जीवन संवारे सबके,

हे ईश्वर, कौन मेरा जीवन संवारे,
इस पीड़ा की घड़ी में,
मै तो अब बस तेरे सहारे,
मजदूर हूँ मैं,

इस विपदा की घड़ी में
कितना मशहूर हूं मैं,
फिर भी,
खाना, कपड़ा और छत से दूर हूँ मैं,
मजदूर हूँ मैं

भूषण कनवाडिया
(अनुभाग अधिकारी)
पत्तन, पोत परिवहन एंव जलमार्ग मंत्रालय

आत्म-सम्मान

यदि कोई कहे तुम नाकाबिल हो।
यदि कोई कहे तुम असफल हो।

खुद को याद दिलाना खुद से
तुम किसी से कम नहीं
तुम्हें देखने वाले की
नजरों में वो दम नहीं

माना कि अंधेरा चहुँ ओर छाया है
रास्ता कहीं भी नजर नहीं आया है
मगर क्या सूरज तिमिर से घबराया है
वो तो हर दिन शान से जगमगाया है

हारना जीवन की असफलता नहीं
क्या नन्हां बच्चा गिरने से डरकर चलता नहीं
जीवन की चुनौतियों में तुझे परखा जाएगा
तू आगे बढ़, रास्ता खुद ब खुद बनता जाएगा

दीपक की रोशनी जैसे अंधकार मिटा देती है
तुझे वह दीपक बनना है खुद जलना है
और जग को रोशन करना है।

सुगंधा
अनुभाग अधिकारी
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

एक सवाल ?

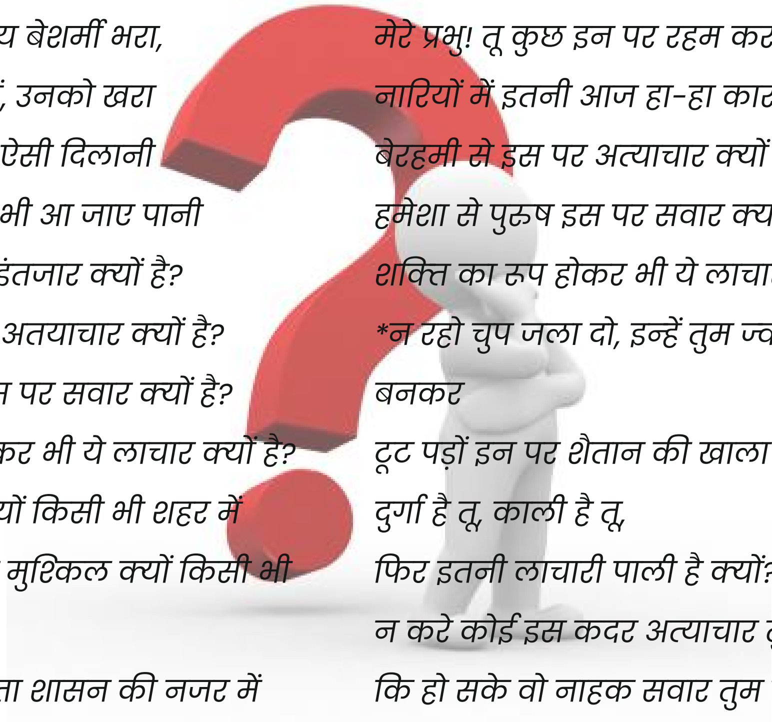

हमेशा से पुरुष इस पर सवार क्यों है?
शक्ति का रुप होकर भी ये लाचार क्यों है?
देती है हमको जो जीवन ये नारी
फिर बेरहमी से इस पर अत्याचार क्यों है?
हमेशा से पुरुष इस पर सवार क्यों है?
शक्ति का रुप होकर भी ये लाचार क्यों है?
करते हैं जो ये कृत्य बेशर्मी भरा,
जवाब देना है तुम्हें, उनको खरा
सजा उनको होगी ऐसी दिलानी
मौत की आंखों में भी आ जाए पानी
आगे बढ़ो फिर ये इंतजार क्यों है?
बेरहमी से इन पर अतयाचार क्यों है?
हमेशा से पुरुष इस पर सवार क्यों है?
शक्ति का रुप होकर भी ये लाचार क्यों है?
सुरक्षित नहीं ये क्यों किसी भी शहर में
बाहर निकलना है मुश्किल क्यों किसी भी पहर में
और कुछ नहीं आता शासन की नजर में
हमारा तंत्र इतना बेकार क्यों है
हमेशा से पुरुष इस पर सवार क्यों है?
शक्ति का रुप होकर भी ये लाचार क्यों है?
चलती है जब पीछे एक साया सा लगता
क्यों इनको अपने पीछे कोई आया सा लगता
दुष्कर्मियों का यहां इतना विस्तार क्यों हैं
हमेशा से पुरुष इस पर सवार क्यों है?
शक्ति का रुप होकर भी ये लाचार क्यों है?
कांटों ने भी अगर इनका दामन है जकड़ा
इन्हें क्यों लगता है किसी ने है पकड़ा
पीछे को मुड़ती है थोड़ी सी डरकर
मेरे प्रभु! तू कुछ इन पर रहम कर
नारियों में इतनी आज हा-हा कार क्यों है
बेरहमी से इस पर अत्याचार क्यों है
हमेशा से पुरुष इस पर सवार क्यों है?
शक्ति का रुप होकर भी ये लाचार क्यों है?
**न रहो चुप जला दो, इन्हें तुम ज्वाला बनकर*
टूट पड़ों इन पर शैतान की खाला बनकर
दुर्गा है तू, काली है तू,
फिर इतनी लाचारी पाली है क्यों?
न करे कोई इस कदर अत्याचार तुम पर
कि हो सके वो नाहक सवार तुम पर।

कपिल कुमार
निजी सहायक
पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

हिंदी पखवाड़ा 2024 की

झलकियां

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय

1, संसद मार्ग, नई दिल्ली- 110001

www.shipmin.gov.in

Designed by MoPSW Media Hub